International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 03-05-2020; Accepted: 16-05-2020; Published: 04-06-2020
www.educationjournal.in
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 18-21

ब्रज लोक संस्कृति में प्रचलित विश्वास और प्रतीक

Manorama Devi
Post-Doctoral fellowship, PGDAV, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का ह्रदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है।

ब्रज लोक विश्वासों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। ब्रज लोक जीवन में जितनी वस्तुऐं प्राप्त होती हैं, उन सभी के संबंध में कोई न कोई, किसी न किसी प्रकार का एक लोक विश्वास प्रचलित है। लोक विश्वास सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य सत्य पर ही विश्वास करता है परन्तु कभी–कभी मानव अपने अपूर्ण ज्ञान के कारण असत्य को सत्य समझ लेता है, और उसी पर विश्वास करने लग जाता है। ''अचेतन मन हमारी समग्र सत्ता का अंग है हम अपने को नकार नहीं सकते, तो विश्वासों को चाहें वे विचारित हो, सुविचारित हो या अविचारित, अविवेकपूर्ण निपट अंधे, हम नकार नहीं सकते। विश्वास स्वीकार नहीं किये जाते। हम इन्हें स्वीकार करने के लिए विवश होते हैं। कारण ? हमारा मानव स्वभाव ही ऐसा है।''[1] जब समाज का एक बड़ा वर्ग इस विश्वास के घेरे में आता चला जाता है तब वह लोक विश्वास बन जाता है। समाज में ऐसे अनेक लोक विश्वास प्रचलित है जिनकी न कोई ऐतिहासिकता होती और न कोई वैज्ञानिकता। हम सुविधा की दृष्टि से ब्रज लोक विश्वासों को वर्गीकृत कर सकते हैं। जैसे– धार्मिक लोक विश्वास, वस्तु के जन्म तथा निर्माण विषयक, वस्तुओं के नाश–विषयक, दिन–मास, तिथि–विषयक, मानव शरीर विषयक, वस्तुओं के उपयोग संबंधी, मानव शरीर की क्रिया विशेष के आधार पर, शगुन–अपशगुन के आधार पर, पशु–पक्षी विषयक, जाति संबंधी सामाजिक लोक विश्वास, भवन–निर्माण संबंधी, लोक कला संबंधी लोक विश्वास, लोक चिकित्सा संबंधी, कृषि तथा व्यवसाय संबधी लोक विश्वास, दिशा, टोना–टोटका, भूत–प्रेत, स्वप्न संबंधी लोक विश्वास..... आदि।

1. धार्मिक लोक विश्वास

ब्रजवासियों की धार्मिक लोक विश्वासों की पृष्ठभूमि धर्म से संबंधित है। इसके अंतर्गत ईश्वर के अवतार, देवी–देवताओं का पूजन, लाख चौरासी जन्म के बाद मानव का दुर्लभ शरीर पाना, स्वर्ग और नरक की कलप्ना, पुर्न्जन्म में आस्था का विवेचन आदि धार्मिक लोक विश्वास है। ब्रज में धर्म–विषयक अनेक मान्यताएँ, पूजन पद्धतियाँ, अनेक सम्प्रदाय, व्रत–कथाएँ, सदाचार, ज्ञान–योग, भक्ति और वैराग्य तथा सांसारिक सूक्तियों के पद, लोक–गीत सभी विश्वास पर भी आधारित हैं। ब्रज के जनमानस में ऐसा विश्वास है कि भादों की शुक्ल चतुर्थी का चाँद देखना अशुभ माना जाता है जो लोग भूल से भी भादों के महीना में शुक्ल चतुर्थी के चाँद को देख लेते हैं। उनका दोष हर रोज के चाँद के दर्शन से छूट जाता है। ब्रज लोक संस्कृति में व्रत, उत्सव, पर्व और विभिन्न तीर्थ आदि का भी अत्यधिक महत्व है। यह सभी धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

2. प्रकृति परक लोक विश्वास

ब्रज वासियों के लिए विभिन्न पर्वत, नदियाँ, कुण्ड, सरोवर, वृक्ष, सूर्य–चाँद–तारे, सुबह, शाम सभी पूजनीय हैं। ब्रजवासियों में यह लोक–विश्वास है कि इन सबको करने से पारलौकिक जीवन सुखमय बनता है।

3. सामाजिक लोक–विश्वास

सामाजिक लोक–विश्वासों का क्षेत्र अति विस्तृत है। सामाजिक लोक–विश्वास ब्रज लोक–जीवन में पग–पग पर बिखरे हुए हैं। ब्रज–वासी प्रत्येक कार्य को करते समय शगुन–अपशगुन देखना अति–आवश्यक मानते हैं। ब्रज लोक–जीवन में मानवीय–क्रियाओं से संबधित अनेक प्रकार के लोक–विश्वास मान्य हैं। जैसे– छींक आना, बिल्ली का रास्ता काटना, खर की आवाज़ सुनना..... आदि सभी विपत्ति आने के सूचक हैं। किसी कार्य को करने के प्रारम्भ में या बाहर जाते समय यदि कोई छींक दे, या बिल्ली रास्ता काट जाय तो अशुभ व अपशगुन माना जाता है। अनिष्ट होने की सम्भावना रहती है। छींक संबंधी लोक–विश्वास ब्रज व भारत में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी छींक को अशुभ माना जाता है। छोटे बच्चे यदि छींकते हैं तो उनके लिए 'छत्रपती माथेरती' कहते हैं। मानवीय क्रियाओं से संबंधित अन्य शुभ–अशुभ, शगुन–अपशगुन, लोक–विश्वास के प्रमुख अंग है जैसे– अंगों का फड़कना, कंचुकी का कसना, चूड़ी का करकना, नीवी–ढीली पड़ना, जूड़े की गांठ स्वयंमेव खुल जाना, कंघी का हाथ से छूट जाना, साड़ी का नीचे से पलट जाना, ... आदि सुखद शुभ लक्षण के शगुन हैं। ब्रजनारियों का वाम अंग फड़कना शुभ माना जाता है। पुरूषों का दाया अंग फड़कना शुभ माना जाता है। नारियों की यदि वायी हथेली खुजलाती हैं तो ऐसा मानते हैं कि पैसा आयेगा यह शुभ सगुन है, ऐसा लोक विश्वास है।

स्वप्न भी शुभ और अशुभ माने जाते हैं। यह भी माना जाता है कि प्रातः काल 4 बजे के समय का सपना सच्चा होता है। अनेकानेक तरह के सपनों का फलागम एक पृथक विषय है। अशुभ स्वप्न के, अशुभ फल होने के उपचार लिखित में मिल जाते हैं। ब्रज में नज़र लगना सबसे बड़ा लोक विश्वास है इस नजर से बचने के लिए माताऐं अपने बच्चों के एक काजल का टीका लगाती हैं। माँ यशोदा भगवान कृष्ण के नजर से बचाने के लिए काजल का टीका लगाती थी, इसलिए ब्रज वनितायें भी अपने बच्चों को नजर से बचाने के लिए टीकाऐं लगाती हैं। ब्रज में चूड़ी टूटना अपशगुन माना जाता है। इसी वज़ह से वर्तमान समय में भी कोई चूड़ी 'टूटना' नहीं बोलता और चूड़ी टूटने के स्थान पर चूड़ी 'मौरना' या 'मौलना' शब्द का प्रयोग करते हैं।

लोक मानस में यह विश्वास भी प्रचलित है कि स्वप्न में नारियल देखने पर पुत्र की प्राप्ति होती है। लोक मानस में यह विश्वास है कि शंख ध्वनि से और शंख जल के सेवन से मूर्खता और हकलाहट दूर हो जाती है। शंख ध्वनि यहाँ तक जाती है वहाँ तक अविनाशकारी शक्तियाँ नष्ट हो जाती है। ब्रज में यदि किसी व्यक्ति से बिल्ली मर जाए या अचानक कार के नीचे दबकर या मोटर साइकिल के पहिये के नीचे आकर/ किसी प्रकार से मर जाती है। तो इस दोष को दूर करने के लिए एक छोटी सी बिल्ली सोने की बनाकर दान देते है। तब यह पाप (दोष) दूर होता है।

4. दिन, तिथि और मास संबंधी लोक विश्वास

ब्रज में दिन संबंधी अनेक लोक विश्वास हैं। उदाहरणार्थ– बुधवार को विदा नहीं करते, मंगल को पहनिए न चूड़ा, खोलिए न जूड़ा, शनिवार को तेल नहीं लाते, शनिवार को चना खाना शुभ माना जाता है। एकादशी को बैंगन और चावल नहीं खाते। दशहरे के दिन 'नीलकण्ठ' के दर्शन बहुत शुभ होता है। दिन के अनुसार वस्त्रों के रंग का प्रयोग करना शुभ मानते हैं। रविवार और मंगल को लाल और गुलाबी, सोमवार और शुक्रवार को श्वेत व नीला, बृहस्पतिवार को पीले रंग तथा शनिवार को काले रंग के वस्त्रों को प्रयोग में लाना शुभ है। श्राद्ध पक्ष के पन्द्रह दिनों में नवीन कार्य प्रारंभ नहीं करते, नये वस्त्र नहीं पहनते, विवाह मुंडन, गृह–निर्माण जैसे कोई भी शुभ कार्य नहीं करते।

5. जाति संबंधी लोक विश्वास

किसी शुभ कार्य के लिए जाते समय तेली या तेलीन (बाँझ औरत) विधवा का सामने पड़ना अपशगुन मानते हैं। यदि महतरानी, वह भी भरा छवड़ा लिये हुए सामने आ जाय तो शुभ माना जाता है या भरा घड़ा पानी लेकर आ जाना शुभ माना जाता है।

6. मानव शरीर संबंधी लोक विश्वास

लड़कियों के तिल यदि बायी तरफ होते हैं तो शुभ माना जाता है। वधू देखने जाते समय बायी और तिल, लम्बे केश, ऊँचे माथे वाली लड़कियों को शुभ माना जाता है। लड़को के तिल दाईं तरफ हों तो शुभ माना जाता है।

7. पशु–पक्षी विषयक लोक विश्वास

ब्रज संस्कृति में पशु–पक्षियों से संबंधित अनेक लोक विश्वास प्रचलित हैं। पौराणिक पशुओं में सबसे प्रधान कामधेनु है। ब्रज संस्कृति का केन्द्र गौधन है। ब्रजवासियों ने गौधन को ही कामधेनु और कल्पतरू की तरह स्वीकार किया है। श्री गणेश का वाहन चूहा, विष्णु का गरूण, शिव का नंदी, सरस्वती का हंस, दुर्गा का सिंह, लक्ष्मी का उल्लू, कार्तिकेय का मोर.....आदि पूज्य है। लोक विश्वास है ब्रज में कोयल की आवाज़ सुनना भी शुभ मानते हैं। प्रातः काल छज्जे की मुँडेर पर कोऐ का बोलना, किसी के आगमन की सूचना देता है। नीलकण्ठ के दर्शन शुभ का प्रतीक है। स्यामा चिरैया पीपल की हरियल डाल पर यदि दाहिने ओर बैठी मिले तो शुभ शगुन माना जाता है। मोर की कूक वर्षागमन की सूचक होती है। मोर के पंख को घर में रखना शुभ माना जाता है, बच्चे अपनी किताब और कॉपी के बीच में मोर का पंख रखते हैं। मोर की आवाज़ सुनना भी शुभ माना जाता है। मोर के पंख की झाड़ू पीलिया जैसे रोग झाड़ने के काम आती है। चींटी मारना पाप माना जाता है, चीटी को आटा खिलाना पुण्य का काम माना जाता है। चींटी अपने अण्डे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं तो वर्षा आगमन की सूचना होती है। यह सब ब्रज के लोक विश्वास हैं।

8. पक्षी विषयक अपशगुन

गाँव में गिद्ध का बैठना अपशगुन है। यदि उल्लू गाँव के ऊपर होकर निकल जाय तो लोग कहते है कि गाँव में मौत की संभावना है। इस अनिष्ट के निवारण हेतु तीन बार थूकते हैं। ब्रज में लोक विश्वास है कि उल्लू जिस छत पर बैठे उसका 'चौपट्टा' हो जाता है। 'टिटा टिहलनी' जिस छत या गाँव पर मडरा–मडरा कर बोले, तो समझो कि मौत होनी अवश्य है। यह लोक विश्वास है।

9. वृक्ष और पौधों विषयक लोक विश्वास

ब्रज में पीपल, ऑवला, वट, केला और तुलसी आदि वृक्षों की पूजा की जाती है। इन सभी वृक्षों में देवता निवास करते हैं। ब्रज में तुलसी का विरवा घर–घर में स्थापित किया जाता है। तुलसी की पत्तियों में अनेक रोग निवारण की क्षमता होती है। तुलसी श्री कृष्ण की प्रेमिका भी थीं। तुलसी की पूजा घर–घर में होती है, तुलसी के पत्तों के बिना चरणामृत नहीं बन सकता। तुलसी, ऑवला की गुणकारिता आज भी सिद्ध है।

10. लोक कला विषयक विश्वास

ब्रज में हर पर्व उत्सव पर ब्रजवनिताऐं घरों में अल्पना, रंगोली बनाती है। रंगोली बनाना भी शुभ शगुन माना जाता है। ब्रजवासी कोई भी शुभ कार्य करते है तो लीपकर सबसे पहले चौक पूरते हैं, या सतिया रखते हैं। ब्रजवनिताऐं अपनी अल्पनाओं में भी सतीये, छवरिया, करवा, हाथी, मोर, शंख, कोड़ी, सूर्य, चंद्र आदि के चित्र बनातीं हैं। ये सभी शुभ माने जाते है।

11. अन्य लोक विश्वास

लोक विश्वासों का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। भवन निर्माण के समय देहरी पूजना या गृह प्रवेश के समय आँगन लीपकर देहरी पूजना, पुत्री विवाह के उपरान्त बाहर से देहरी पूजना सर्वमान्य है। शुभ माना जाता है। गौ–घूलि के समय ब्रजवासी संझावाती करते हैं। वर्तमान समय में बिजली आ गयी है लेकिन ब्रजवासी मंदिर और तुलसी के विरवा के समक्ष शाम होते ही घी का दिया अवश्य जलाते हैं। जिसे लोक में 'दीपक बलाना' कहते हैं। ऐसा लोक विश्वास है कि साध्य–बेला में लक्ष्मी का आगमन होता है। ब्रजनारियों में यह भी लोक विश्वास है कि कोड़ियों की करघनी पहनने से मनचाही संतान पैदा होती है।

यदि बिल्ली रास्ता काट दे तो अशुभ माना जाता है। बिल्ली को पालना शुभ नहीं मानते है क्योंकि बिल्ली अनिष्ट ही चाहती है। कुत्ता पालना अच्छा मानते हैं। कुत्ते को विपत्ति में सहायक मानते हैं। ब्रजवासी पहली रोटी गाय को और आखिरी रोटी कुत्ते को देना शुभ मानते है। घरों में शंख रखना और बजाना शुभ माना गया है। यह निर्घनता को दूर करता है।

ब्रज लोक मानस में इतने अधिक लोक विश्वास प्रचलित है कि हमने नमूना मात्र लिखे हैं। ब्रज लोकमानस में पग–पग पर अनेकों लोक विश्वास भरे पड़े हैं जिन्हें लिखना असम्भव है। लोक जीवन का साक्षी भाव हमारे लोक विश्वासों को नई जमीन पर प्रतिष्ठित करते हैं।

प्रतीकों का संबंध मानव के संस्कार, वातावरण, अनुभव, अध्ययन और कल्पना से प्रमुख रूप से होता है। अध्ययन और वातावरण किसी व्यक्ति को अधिकाधिक शब्दों से परिचित कराते हैं। भारतीय चिंतन धारा में इस मर्म को इस प्रकार परिभाषित किया हैः–"प्रकृति एक मंदिर है। जिसमें असंख्य जीवित स्तभं खड़े हैं। इन स्तभों के बीच में से कुछ अस्पष्ट ध्वनियाँ आ रही हैं। इन

ध्वनियों के बीच में से मनुष्य गुजरता है तो लगता है कि वह इन ज्ञात ध्वनियों के माध्यम से उस अज्ञात तत्व की ओर इन प्रतीकों से बने ब्रह्माण्ड के मध्य से अग्रसर हो रहा है।''[2]

ब्रज का लोक जीवन बहुरंगी हैं। प्रकृति के खुले आंगन में बसी लोक संस्कृति हमें विविध लोक संस्कारों से जोड़ती है। ब्रज लोक संस्कृति में सदियों पुरानी परम्परायें आज भी चली आ रही हैं। जिनसे लोक जीवन की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। ब्रज के लोक जीवन में बहुत प्रकार के प्रतीक है। हम यहाँ कुछ सांस्कृतिक प्रतीकों का विवेचन कर रहे हैं। जैसे– 'हल्दी', 'धान' कलश, आम्र–पल्लव, पान–सुपारी, स्वास्तिक, दूध, दधि, पुष्प, दूब, अक्षत, रोरी, सिंदूर, नारियल, हवन–सामग्री, शंख, कोड़ी, चूड़िया रंगोली आदि सभी शुभ प्रतीक माने जाते हैं।

सतिया / स्वास्तिक

चारों दिशाओं में व्याप्त विश्वमंडल के चतुर्भुजी रूप का प्रतीक 'स्वास्तिक' ब्रज–लोक जीवन की सरल भाषा में 'सतिया' नाम से प्रसिद्ध है। 'स्वास्तिक' का संबंध सूर्य से होता है। इसके मध्य में सूर्य है जो संपूर्ण सृष्टि का द्यौतक है यही संपूर्ण ब्रहमाण्ड का प्रतीक है। यह मानव और विश्व का मांगलिक चिन्ह है। इसकी चारों भुजाऐं भगवान विष्णु की चारो भुजाओं का प्रतीक मानी जाती हैं।

स्वास्तिक का धार्मिक कार्यो में सर्वप्रथम स्थान है। ब्रज लोक जीवन में कोई भी शुभ कार्य किया जाता है तब यह भी माना जाता है कि 'स्वास्तिक' या सतिया गणेश का प्रतीक है। जो विघ्नों को दूर करने वाला होता है।

वैदिक धर्म के अनुसार– चारों दिशायें, चार देवताओं के प्रतीक हैं– 'अग्नि', 'इन्द्र','वरूण', व सोम का प्रतीक है। स्वास्तिक की चार रेखाओं की तुलना चार पुरूषार्थ, चार वर्ग, चार लोक, चार आश्रम और चार देवों से की गई है।

वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार– ''स्वास्तिक का यदि संकोचन होने लगे तब यही स्वास्तिक अंत में केवल बिंदु के रूप में ही रह जायेगा; यही सृष्टि है, जीवन है, संसार है।''[3]

पं० बटुकनाथ शास्त्री के अनुसार– स्वास्तिक विघ्न को नष्ट करने वाला गणपति है। स्वास्तिक को मंगल कार्यो में बनाया जाता है।

नारियल

नारियल केवल ब्रज का ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय संस्कृति में शुभ का प्रतीक है। प्रत्येक मांगलिक–विधान, देवी–पूजा, गणेश पूजा, हवन, गृह–प्रवेश, सभी मांगलिक संस्कारों में नारियल प्रमुख चढ़ावा है। बालक के जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत एवं विवाह के प्रत्येक मांगलिक अवसर पर नारियल के साथ टीका करते हैं। विवाह से पूर्व नारियल भेजते हैं। बारात आने पर पहली बार वर का नारियल से टीका करते हैं। विवाह संस्कार में वर की झोली में नारियल दिया जाता है और कन्या की विदा–वेला में भी भविष्य की मंगल–कामना करते हुए गोद में नारियल रखते हैं। नारियल का पेड़ समग्र सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। नारियल संपूर्ण जीवन का प्रतीक है। एक कठोर आवरण में मधुर रस सहित संचित करने वाला जीवन है। नारियल हमारी संस्कृति का मांगलिक प्रतीक है। जो पूरे भारत को एकता के सूत्र में बाँधने वाला है। कोई भी शुभ कार्य या मांगलिक विधान किया जाता है तो नारियल फोड़ा जाता है। नारियल फोड़ना अंहकार दूर करने का प्रतीक है।

शंख

सभी धर्मों में शंख नाद को पवित्र माना गया है। कोई भी शुभ कार्य, मांगलिक–विधान, पूजा–कार्य क्रम या आरती के समय शंख बजाने का विधान है। बहुत से घरों में हर–दिन सुबह–शाम शंख–बजाना नित्य–कर्म में शामिल है। शंख–स्वास्थ्य, पराक्रम, विजय, पवित्रता और जागरण का प्रतीक है।

कोड़ी

कोड़ी मुद्रा या धन का ही एक रूप है इसलिए लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। दिपावली के अवसर भी कुछ लोग कोड़ी की पूजा करते है। तान्त्रिक पूजा में कोड़ी को पूजा जाता है। कोड़ी को तांत्रिक लोग शक्ति का प्रतीक मानते हैं।

सूर्य

सूर्य अंधकार पर विजय प्राप्त करने वाला है। सूर्य, तेजस्विता, प्रकाश, विजय दिलाने वाला कीर्ति दिलाने वाला, जन–जन के लिए कल्याण का प्रतीक है।

हंस

इसे हमारी संस्कृति में विशेष स्थान है। हंस माया से पूर्णतः निर्लिप्त जीव का प्रतिनिधत्व करता है। आत्मा की तरह यह (सफेद) स्वेत है। जल–थल और आकाश में विचरण करने वाला है। इसका कोई अपना निवास स्थान नहीं है। आते–जाते का स्वभाव है। हंस आत्मा, परमात्मा और ब्रह्म का प्रतीक है।

दूब

लोकमानस में दाम्पत्य जीवन का प्रतीक स्वरूप 'दूब' हरीतिमा का प्रतीक है। 'दूब' सरलता का, सहजता का, आत्मीयता का, प्रेम की प्रगाढ़ता, समर्पण का, विनम्रता का, आघात सहने की क्षमता का, झुकने की महानता का प्रतीक है। लोक–मानस में 'दूब' की यही अनिवर्चनीयता है कि वह सहती है, झेलती है, गृहण करती है। सभी कुछ मनोभाव से।

कुश

कुश, प्रगति का, पवित्रता का, शुद्धता का और सर्तकता का प्रतीक माना जाता है।

दूध और दधि

दधि के मिलाने से दूध दही बन जाता है। फिर उसका दधित्व कभी समाप्त नहीं होता। चाहे नमक डालो या मीठा। दधित्व कभी नष्ट नहीं होगा। यही लोक–मानस की प्राणभूत ऊर्जा का अक्षय स्रोत है। यही लोक–मानस की सांस्कृतिक माँगलिक चेतना का प्रतीक 'अच्छत' रूप है। लोक मानस के जीवन की मंगल कामना अक्षत रहे, अखण्ड रहे, अमर रहे, अजस्त्र रहे, अनन्त रहे। यही लोकमानस को संदेश अच्छत देता है। मन रूपी थाल में अच्छत का आर्शीवाद अनन्त तक रहे।

कुमकुम, चूड़ी, मैंहदी, महावर सभी नारियों के सुहाग के प्रतीक है। ब्रज में सभी शुभ कायों में ब्रज वनिताएँ श्रंगार करके मेंहदी महावर और कुमकुम लगाकर भाग लेती हैं। ब्रज लोकजीवन में पर्व उत्सव या किसी शुभ कार्य के समय रंगोली बनाते है। रंगोली बनाना भी भारतीय लोक जीवन में शुभ का प्रतीक है। ब्रज वासियों में हर शुभ कार्य को करने से पहले आंगन में चोक पूरने की प्रथा है। यह भी शुभत्व का प्रतीक है। ब्रज लोक जीवन में रंगोली कई रंगों से मिलाकर बनाई जाती है। रंगोली लोक मानस को एकता से मिलकर चलने का प्रतीकवत है। रंग हमारी मानसिकता में जागरूक चेतना के प्रतीक हैं। लोक मानस लोक संस्कृति में प्रचलित लोक विश्वासों और लोक प्रतीकों को अपनाकर मानसिक अवसाद से बच जाता है और लोक मानस का जीवन सकारात्मक रूप से सुखमय हो जाता है। सुख और दुख तो जीवन भर आते और जाते रहते हैं। किंतु लोकमानस लोक संस्कृति में प्रचलित लोक विश्वासों और लोक प्रतीकों को अपनाकर अपना जीवन सार्थक कर लेते हैं। इसीलिए कहा गया है–मन के हारे हार, मन के जीते जीत।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ हरद्वारी लाल शर्मा– लोकवार्ता विज्ञान (खण्ड दो)
2. डॉ लक्ष्मी नारायण शर्मा, हिंदी कविता में पुराख्यान तत्व, पृ० 27–28
3. वासुदेव शरण अग्रवालः 'भारतीय कला पुस्तक' पृ० 67